दिनांक - 06-02-2024
अनिल कुमार, इतिहास विभाग, आर० बी० जी० आर० कॉलेज, महाराजगंज
TDC PART-I, HISTORY (Hon), PAPER-I

प्राचीन भारतीय इतिहास के साहित्यिक स्रोत

प्राचीन भारतीय इतिहास के विविध स्रोत हैं। यद्यपि प्राचीन भारतीयों में इतिहास लेखन की श्रृंखला बद्ध परंपरा नहीं थी जैसा हम प्राचीन यूनान या रोम में पाते हैं। फिर भी प्राचीन भारत में विभिन्न विषयों से सम्बन्धित अनेक ऐसे ग्रंथों की रचना हुई जो प्राचीन इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराते हैं। इन ग्रंथों की विषयवस्तु धार्मिक, समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक और नीतिशास्त्र से सम्बन्धित है।

ब्राह्मण धर्मग्रंथ- प्राचीन भारतीय साहित्य का रूप सर्वथा धार्मिक रहा है क्योंकि प्राचीन कालसे ही भारत एक धर्मप्रधान देश होने के कारण यहाँ प्रायः तीन धार्मिक धारायें- वैदिक, जैन एवं बौद्ध प्रवाहित हुई। वैदिक धर्म ग्रंथ को ब्राह्मण धर्म ग्रंथ भी कहा जाता है। इसमें वेद का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। वेद चार है- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनमें ऋग्वेद प्राचीनतम है जिससे वैदिक कालकी अवस्था पर इनसे काफी प्रकाश पड़ता है। साम का अर्थ गान होता है और सामवेद गानप्रधान है। यजुर्वेद में यज्ञ विधियों का प्रतिपादन किया गया है। अथर्ववेद में विविध वर्ण्य विषय हैं और इसमें आर्यों और अनार्यों के विचारों का समन्वय मिलता है। वेदों से आर्यों के जीवन के विषय में, उनकी राजनीतिक, समाजिक, आर्थिक एवं धार्मिकजीवन की जानकारी मिलती है। इस प्रकार वेद भारतीय इतिहास के प्रमुख स्रोत हैं।

वेदों के बाद 'ब्राह्मणग्रन्थों' की गणना होती है। पद्य में रचित ये सारे ग्रंथ वेद का टीका करते हैं। उत्तरवैदिक आर्यों की सभ्यता पर इनसे महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। प्रत्येक ब्राह्मण एक वेद या संहिता से सम्बन्धित हैं। ये ब्राह्मणग्रंथ वैदिक कालिन समाज के राजनीतिक, समाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालते हैं। ब्राह्मण ग्रंथ के बाद आरण्यक का स्थान है। इनमें यज्ञ के अतिरिक्त चिन्तन को अधिक महत्व दिया गया है और दार्शनिक प्रश्नों पर भी विचार किया गया है। ये ग्रंथ वनों में (आरण्यों में) निवास करने वाले

संन्यासियों के मार्गदर्शन के लिए लिखे गये थे।

उपनिषदों में प्राचीन भारत का दार्शनिक ज्ञान सुरक्षित है। इसकी रचना 800-500 B.C के मध्य हुई। इसके अध्ययन से यह बोध होता है कि इस काल के आर्यों ने सभ्यता धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में विशेष उन्नति प्राप्त की।

वेदांग वेद के अन्तिम भाग माने जाते हैं इनकी संख्या छः है - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये सब वेदों के अंग समझे जाते थे। वैदिक स्वरों का विशुद्ध रूप से उच्चारण करने के लिए 'शिक्षा' का निर्माण हुआ। कल्पसूत्र में यज्ञ संबंधी विधि नियम, मनुष्य के समस्त लौकिक और परलौकिक कर्तव्य तथा विभिन्न धार्मिक समाजिक तथा राजनीतिक कर्तव्य और अधिकारों को बतलाते हैं। इनसे भारत की समाजिक, धार्मिक और राजनीतिक अवस्था तथा संस्थाओं पर काफी प्रकाश पड़ता है। व्याकरण के माध्यम से भाषा का रूप स्थिर किया गया। निरुक्त यह बतलाता है कि अमुक शब्द का अमुक अर्थ क्यों होता है।

महाकाव्य में रामायण और महाभारत महत्वपूर्ण हैं। इनके माध्यम से भी भारतीय इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ता है। रामायण को आदि काव्य और महाभारत को इतिहास माना गया है। महाभारत में सिथियन, यूनानी, बैक्ट्रियन और हूणों का भी उल्लेख मिलता है। इन महाकाव्यों के ~~प्रारम्भिक~~ प्रारम्भिक भाग बहुत प्राचीन हैं परन्तु बाद में इनमें कुछ और भी सम्मिलित कर दिया गया है ऐसा शायद ही कोई विषय हो जिस पर इन महाकाव्यों द्वारा प्रकाश न डाला गया हो। इतिहास के ~~हिस्ट~~ दृष्टिकोण से महाभारत का अध्ययन सर्वथा अपेक्षित माना गया है। महाभारत में कलियुग के राजाओं की सूची के साथ-साथ आन्ध्र तथा उत्तर आन्ध्र के राजाओं का भी उल्लेख मिलता है। महाभारत में धृतराष्ट्र, वैचित्रवीर्य, देवकी पुत्र कृष्ण, यज्ञसेन, शिखण्डी आदि का वर्णन मिलता है कुरुओं और सृञ्जय की लड़ाई महाभारत की मुख्य घटनाओं में एक है।

'पुराण' का अर्थ होता है प्राचीन। पुरा
में ऐतिहासिक सामग्री भरी पड़ी है। यों तो पुराणों की संख्या
काफी है, फिर भी अठारह पुराण महत्वपूर्ण हैं - ब्रह्मा, पद्म,
विष्णु, शिव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, अग्नि, भविष्य,
ब्रह्मवैवर्त, लिंग, वराह, स्कन्द, वामन, कूर्म, मत्स्य, गरूड़
और ब्रह्माण्ड। पुराण वास्तविक इतिहास के अधिक निकट
हैं। इनमें हमें प्राचीन वंशों का ऐतिहासिक विवरण मिलता
गुप्तकाल तक के शासकों का इतिहास इनके अन्तर्गत पर्या
मात्रा में मिलता है। पुराणों में शिशुनागवंश, नन्दवंश, मौर्यवंश
शुंगवंश, कण्ववंश, आन्ध्रवंश और गुप्तवंश का परिचय मिलत
इससे स्पष्ट होता है कि पुराण आलोक-रश्मि का काम भारत
इतिहास के लिए करते हैं।

बौद्धसाहित्य — शासन के रूप में बौद्ध साहित्य का किसी भी स्थिति में कम महत्व नहीं है। बौद्धसाहित्य में प्रथम स्थान जातकों का है। इनमें बुद्ध के पूर्वजन्म की गाथाएँ हैं। यद्यपि वे गाथाएँ काल्पनिक हैं, फिर भी इनके आधार पर भारतीय समाज का दिग्दर्शन कराया जा सकता दूसरा स्थान त्रिपिटक का है। बुद्ध के निर्वाण प्राप्त करने के बाद त्रिपिटकों की रचना हुई थी। इनसे बुद्ध के सिद्धांतों और वचनों का पूर्ण संग्रह प्राप्त होता है एवं तत्कालिन अवस्था का पता चलता है। महावंश एवं दीपवंश भी भारतीय इतिहास पर विशेष प्रकाश डालते हैं। मिलिन्दपनहो, महावस्तु, ललितविस्तार और बुद्धचरित द्वारा भी भारतीय इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ता है। इस प्रकार बौद्ध साहित्यों से भारतीय इतिहास के विभिन्न पक्ष उद्‌भासमान हुए हैं। विदेशों में भी बौद्ध परम्पराओं का विकास किस प्रकार हुआ पता चलता है।

जैनसाहित्य — जैन धर्म ग्रंथों की रचना प्राकृत भा में हुई। संस्कृत और पाली साहित्य के समान प्राकृत साहि भी प्राचीन भारतीय इतिहास की जानकारी का एक प्रमुख स्रो है। इनसे भी राजनीतिक, समाजिक धार्मिक एवं आर्थिक जीव की जानकारी मिलती है। जैन ग्रंथों में प्रमुख परिशिष्टपर्व,

आचारांगसूत्त, कल्पसत्त, भगवतीसूत्त, उवासगदसाओसुत्त, भद्रबाहु चरित, जैन आगम इत्यादि हैं। इन ग्रंथों से महावीर की जीवनी एवं जैन धर्म के उपदेशों के साथ-साथ तत्कालीन राजनीतिक, समाजिक और आर्थिक व्यवस्था का भी ज्ञान प्राप्त होता है।

धर्मनिरपेक्ष साहित्य — ऊपर जिन रचनाओं का उल्लेख किया गया है वे धर्म प्रधान ग्रंथ हैं। वे मूलतः धार्मिक दृष्टिकोण से लिखे गये थे, परन्तु इनके अतिरिक्त प्राचीन भारत में अनेक धर्मनिरपेक्ष, ऐतिहासिक और अर्द्ध-ऐतिहासिक ग्रन्थों की भी रचना हुई जो इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए आवश्यक है। ऐसे ग्रंथों में सबसे प्रमुख अर्थशास्त्र और राजतरंगिणी हैं। अर्थशास्त्र की रचना चाणक्य, कौटिल्य या विष्णुगुप्त ने मौर्यकाल में की। अर्थशास्त्र से मौर्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था विशेषतया चन्द्रगुप्त मौर्य के प्रशासन की अच्छी जानकारी मिलती है। पणिनि से पूर्व मौर्यकालीन सभ्यता और गणशासन पर प्रकाश पड़ता है। पतञ्जलि के महाभाष्य से और कालिदास के मालविकाग्निमित्र नामक नाटक से शुंगवंश के इतिहास पर प्रकाश पड़ता है। गार्गीसंहिता में यवन आक्रमण का उल्लेख है। विशाखदत्त की मुद्राराक्षस नाटक द्वारा नंदवंश और प्रारम्भिक मौर्य काल का पर्याप्त ज्ञान होता है। बाणभट्ट लिखित हर्ष चरित से हर्षकालीन इतिहास का दिग्दर्शन होता है। कामन्दकीय नीतिशास्त्र से हमें तत्कालिन राजनीतिक और समाजिक आचार विचार का ज्ञान होता है। वाक्पतिराज द्वारा रचित प्राकृत भाषा के ग्रंथ गौडवहो में कन्नौज-नरेश यशोवर्मन की दिग्विजय का वर्णन है। परिमल गुप्त द्वारा रचित नवसाहसांकचरित्र से परमारवंश के इतिहास एवं हूणों का भी उल्लेख मिलता है। बिल्हण रचित विक्रमांकदेव चरित से कल्याणी के चालुक्य वंश का इतिहास स्पष्ट होता है। कल्हण रचित राजतरंगिणि में काश्मीर का इतिहास वर्णित है।

इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि साहित्यिक स्रोतों के संतुलित अध्ययन के आधार पर ही प्राचीन भारतीय इतिहास का निरपेक्ष अध्ययन किया जा सकता है। // 2

दिनांक - 06-02-2024
अनिल कुमार, इतिहास विभाग, आर० बी० जी० आर० कॉलेज, महाराजगंज
TDC PART III, HISTORY (Hon), PAPER - V

जहिरुद्दीन मुहम्मद बाबर :- मुगल वंश का संस्थापक एवं उपलब्धियाँ

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना एक युगान्तकारी घटना के रूप में देखी जाती है। यही कारण है कि मुगल साम्राज्य का संस्थापक जहिरुद्दीन बाबर मध्यकालिन भारतीय शासकों में विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि भारतीय इतिहास में वह मात्र एक नये वंश एवं साम्राज्य का संस्थापक ही नहीं था, बल्कि एक नई परम्परा का अग्रदूत भी था, जिसने मध्यकालीन भारत के सांस्कृतिक जीवन को और अधिक सम्पन्न बनाया।

बाबर, तैमूर का वंशज था एवं इसके पिता फरगना के शासक थे। मध्य एशिया का क्षेत्र उस समय राजनैतिक रूप से अस्त-व्यस्त था। समरकंद पर अधिकार केलिए बाबर ने संघर्ष में भाग लिया किन्तु असफल रहा और अंततः उसे भारत में साम्राज्य निर्माण के लिए प्रयास करने पड़े। 1525 में बाबर ने भारत पर पहला आक्रमण किया मगर यह अभियान बीच में ही स्थगित करना पड़ा। बाबर का दूसरा और निर्णायक आक्रमण 1526 ई० में हुआ। जब उसने पंजाब को जीतकर दिल्ली की ओर बढ़ने का फैसला किया और पानीपत के मैदान में उसका संघर्ष इब्राहिम लोदी के साथ हुआ जिसमें उसे सफलता प्राप्त हुई।

पानीपत के विजय के साथ बाबर के जीवन का एक नया चरण आरम्भ हुआ। उसकी आर्थिक कठिनाइयाँ दूर हुई तथा उसकी राजनैतिक गतिविधियों का केन्द्र मध्य एशिया से हटकर उत्तरी भारत में स्थापित हुआ। वह लाहौर से लेकर दिल्ली एवं आगरा तक का स्वामी बन बैठा किन्तु पानीपत की विजय से मुगल साम्राज्य की स्थापना अभी पूर्ण नहीं हुई थी। क्योंकि अभी उत्तरी भारत के राजनीति में दूसरे महत्वपूर्ण अर्थात राजपूतों के साथ संघर्ष बाकी था।

राजपूत शक्ति का नेतृत्व मेवाड़ के शासक राणा साँगा के हाथ में था। राणा ने 1527 में आगरा पर चढ़ाई की और खानवा का युद्ध लड़ा गया। लेकिन अंततः विजयश्री बाबर के हाथ लगी। खानवा के युद्ध का महत्व पानीपत से अधिक था। इस युद्ध ने मुगलों की सैनिक क्षमता की

पुष्टि की। अब यह स्पष्ट था कि भारतीय शासकों के लिए मुगलों को भारत की राजनीति से अलग करना सम्भव नहीं। मुगल साम्राज्य की स्थापना वस्तुतः पूरी हो चुकी थी। राजपूतों की शक्ति इस हार से गम्भीर रूप से प्रभावित हुई। उत्तरी भारत पर अधिकार के संघर्ष से वे अलग हो गये।

1528 में बाबर ने चन्देरी के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। मेदनी राय पराजित हुआ और सामरिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण चन्देरी का दुर्ग बाबर के हाथ लगा। 1529 में बाबर पूर्वी भारत में प्रवेश किया और घाघरा की लड़ाई में नूहानी अफगान शासकों को पराजित किया। जिन्होंने लोदी वंश के पतन के पश्चात बिहार में स्वतंत्र सत्ता ग्रहण कर ली थी। वस्तुतः घाघरा की लड़ाई किसी पक्ष में निर्णायक विजय अथवा पराजय में समाप्त नहीं हुई। परन्तु बाबर की स्थिति मजबूत रही और उसने नूहानियों को अपनी सत्ता मानने के लिए बाध्य किया यह बाबर की अन्तिम विजय थी और अगले वर्ष 1530 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

पानीपत से घाघरा तक बाबर ने भारत में चार महत्वपूर्ण युद्ध लडे जिसके फलस्वरूप उसकी सत्ता का विस्तार बिहार की सीमा तक सम्भव हुआ। इसमें उसके अपने राज्य काबुल और कंधार के क्षेत्र भी सम्मिलित थे। समकालीन मध्य एशिया एवं भारत में यह सबसे विस्तृत राज्य था। परन्तु इसमें कुछ त्रुटियाँ भी थी। सर्वप्रथम इस राज्य का सुदृढ़ीकरण नहीं हुआ था और इसके लिए एक निश्चित प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण भी नहीं हुआ था ये त्रुटियां बाबर के मृत्यु के उपरांत उसके उत्तराधिकारी हुमायूँ के लिए समस्याओं का कारण बनी। उसकी सफलता में इनका स्पष्ट योगदान था। यही कारण है कि कुछ इतिहासकार साम्राज्य निर्माता के रूप में बाबर को विशेष महत्व नहीं देते जैसा कि लेनपूल ने कहा है कि "Babar was a mere soldier of fortune and not the founder of an empire" फिर भी बाबर द्वारा एक नये राज्य की स्थापना से प्रशासन और अन्य क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए।

To be continued

बाबर ने राजत्व के सिद्धांत में परिवर्तन लाया। उसने सुल्तान की जगह बादशाह की पदवी का उपयोग किया। उसने दिल्ली-सल्तनत में प्रचलित जागीरदारी प्रथा के रूप में परिवर्तन लाया। यह सही है कि ये परिणाम प्रत्यक्ष से अधिक अप्रत्यक्ष थे, लेकिन इनके महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता। आर्थिक क्षेत्र में भी इस आक्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम यह निकला कि भारत का व्यापारिक सम्बन्ध कन्धार और मध्य एशिया तक जुड़ गया जिससे विदेश व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

सांस्कृतिक जीवन के क्षेत्र में भी बाबर के आने से कुछ नई परम्पराएं आरम्भ हुई। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि बाबर के आक्रमण से न केवल राजनैतिक क्षेत्र में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण परिणाम प्रकट हुए।

इससे अधिक कोई मौलिक परिवर्तन या किसी नई व्यवस्था के निर्माण की सम्भावना बाबर के समक्ष नहीं थी। वह भारत में अजनबी था, यहाँ की परम्पराओं से अपरिचित था। और अल्पकालीन शासन काल में वह प्रशासन से अधिक युद्धों एवं सैन्य संचालन की समस्याओं में व्यस्त रहा। निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि एक विजेता के रूप में बाबर की उपलब्धियां एक प्रशासक के रूप में उसकी उपलब्धियों से अधिक प्रभावशाली थी। वह एक कुशल एवं योग्य सेनानायक था।

उसने भारत में नये उपकरण और नयी सैनिक पद्धति का विकास किया। भारत में तोपों का प्रयोग बाबर का योगदान है। तुलुगमा रणपद्धति अर्थात दुश्मन की सेना को किनारे से घेरना जो मध्य एशिया-युद्धों की विशेषता थी, बाबर द्वारा भारत में सफल ढंग से प्रयोग में लाई गई। उसने अपने

प्रशासन को भी अर्द्ध सैनिक रूप में संगठित किया। सामन्तों को अनुशासन में रखा और वंशानुगत जमींदारी पर रोक लगाई। लेकिन विघटनकारी तत्वों को पूर्ण नियंत्रण में रखना बाबर के लिए सम्भव नहीं हुआ। स्थानीय विद्रोहों की समस्या, अफगान शक्ति का पुनर्गठन, बाबर द्वारा नियन्त्रित नहीं किये जा सके, यही उसकी असफलता थी।

बाबर का योगदान आर्थिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में भी महत्व रखता है। मुगल साम्राज्य की स्थापना ने भारत को काबुल और कन्धार के साथ जोड दिया, जो विदेश व्यापार के प्रमुख केन्द्र थे। इससे भारत का व्यापार सम्पन्न हुआ। व्यक्तिगत रूप से बाबर एक सुसंस्कृत व्यक्ति था। उसे तुर्की भाषा में एक अच्छे लेखक तथा कवि के रूप में देखा जाता है। उसकी आत्मकथा "तजुके-बाबरी" तुर्की साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। बाबर ने भारत में उद्यानों एवं भवनों का निर्माण करवाया जिनके अवशेष अभी भी आगरा में देखे जा सकते हैं। इसका प्रभाव भारतीय स्थापत्य पर प्रकट हुआ। इस प्रकार बाबर ने भारत में न केवल एक नये राज्य एवं वंश की स्थापना की, बल्कि एक नयी सांस्कृतिक परंपरा को भी आरंभ किया।

निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि बाबर एक विद्वान शासक था तथा व्यक्ति के रूप में भी उसका चरित्र सराहनीय था। एक कुशल शासन-प्रबन्धक के रूप में असफल होते हुए भी सैनिक और सेनापति, राजनीतिज्ञ और कुटनीतिज्ञता में यह शासक सफल रहा। यही कारण है कि स्मिथ ने बाबर को अपने युग का एशिया का सबसे 'शानदार' बादशाह माना है।

दिनांक - 06-02-2024

अनिल कुमार, इतिहास विभाग, आर० बी० जी० आर० कॉलेज, महाराजगंज

CBCS, SEMESTER-I, PAPER-I, HISTORY MJC&MIC

भारतीय अंक प्रणाली और गणित

classmate
Date
Page

प्राचीन भारतीय इतिहास में गणित विषय अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गणित विषय की महत्ता वैज्ञानिक जगत में सर्वाधिक है। गणित न सिर्फ विज्ञान अपितु अंकशास्त्र, ज्योतिष आदि विषय की भी आधारशिला है। व्यवहारिक जीवन में भी गणित की महत्ता एवं उपादेयता को विशिष्ट स्थान प्राप्त है। गणित की वर्तमान पद्धति निःसंदेह भारतीय मनीषियों की देन है क्योंकि वर्तमान अंक पद्धति के आधार, प्राचीन भारतीय विद्वानों द्वारा प्रयुक्त अंक पद्धति है।

भारतीय अंक पद्धति- भारतीयों का गणित विषय में सबसे महत्वपूर्ण योगदान वह अंक पद्धति है जिसका प्रयोग करके बड़ी से बड़ी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है ये अंक हैं- 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 0 । इन दस चिन्हों में प्रत्येक जटिल से जटिल प्रश्न को हल करने की शक्ति प्राप्त है। इनमें से प्रत्येक का अपना स्वतंत्र मूल्य होता है तथा उसके स्थान परिवर्तन के साथ ही उनका मूल्य परिवर्तित हो जाता है। जैसे - 23453 में 2 का मूल्य 2 है किन्तु प्रथम दो का मूल्य बीस हजार है। अंको पर आधारित यह अंक पद्धति 'दशमिक अंक पद्धति' कहलाती है। इन अंकों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण '0' शून्य है। शून्य का सामान्य अर्थ है कुछ नहीं किन्तु अंक पद्धति में शून्य के आश्चर्यजनक परिणाम होते हैं। किसी संख्या के अंत में एक शून्य रखने पर उसका मूल्य दस गुना बढ़ जाता है।

वैदिक साहित्य — वैदिक साहित्य में अंक पद्धति का उल्लेख इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि वैदिक युग में "दाशमिक पद्धति" प्रचलित थी। ऋग्वेद में एक, द्वि, त्रि, चतुर, पंच, षट, सप्त, अष्ट, नव, दस, शत, सहस्र जैसे

शब्द इस बात का सूचक है कि वैदिक युग में भी गणना दाशमिक पद्धति पर आधारित थी। ऋग्वेद में जुए में खेलने वाले पासे का उल्लेख है जिस पर 1,2,3,4 अंक उत्कीर्ण थे। ऋग्वेद में सबसे बड़ी इकाई अयुत (10,000) है जबकि यजुर्वेद में यह संख्या परार्द्ध (10,00,00,00,00,000) दस खरब है।

ब्राह्मण साहित्यों में अंक संकेत — ब्राह्मण साहित्यों से ज्ञात होता है कि इस समय दिन और रात को 30 मुहूर्त में बाँटा गया था जिसमें एक मुहूर्त का विभाजन 1.17 सेकेण्ड में किया गया। तैत्तरीय संहिता, मैत्रायणी तथा काठक संहिता में शत्तोत्तर गणना का उल्लेख है यजुर्वेद में 4 का पहाड़ा भी मिलता है।

बौद्ध एवं जैन साहित्य — बौद्ध और जैन साहित्यों में भी जैसे बौद्ध ग्रंथ 'ललित विस्तार' में कोटि के आगे भी "शतगुणोत्तर" की गणना की सूची मिलती है इनकी सबसे बड़ी गणना तल्लक्षणा (10^{53}) है।

इनसे स्पष्ट है कि भारतीयों की देन के परिणामस्वरूप ही विश्व को संख्यायें लिखने का ज्ञान हुआ। 'शून्य' का प्रयोग पिंगल ने अपने छन्दसूत्र में ईसा के 280 पूर्व किया। आर्यभट्ट एवं भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, महावीर आदि ने अपने प्रयत्नों से अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित सम्बन्धी अनेक नियमों का प्रतिपादन किया। अरबवासियों ने पाश्चात्य जगत को भारतीय गणित से परिचित कराया तत्पश्चात् यूरोप ने इसे ग्रहण किया।

प्राचीन भारत में गणित का अध्ययन — प्राचीन भारतीय साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीयों को गणित विद्या का ज्ञान भली-भाँति था।